अध्याय - २९

(१) मद्रासी भजनी मेला (२) तेंडुलकर (पिता व पुत्र) (३) डॉक्टर कैप्टन हाटे और (४) वामन नार्वेकर आदि की कथाएँ।

(१) मद्रासी भजनी मेला

लगभग सन् १९१६ में एक मद्रासी भजन मंडली पवित्र काशी की तीर्थयात्रा पर निकली। उस मंडली में एक पुरुष, उनकी स्त्री, पुत्री और साली थी। अभाग्यवश, उनके नाम यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं। मार्ग में कहीं उनको सुनने में आया कि अहमदनगर के कोपरगाँव तालुका के शिरडी ग्राम में श्री साईबाबा नाम के एक महान् सन्त रहते हैं, जो बहुत दयालु और पहुँचे हुए हैं। वे उदार हृदय और अहेतुक कृपासिन्धु हैं। वे प्रतिदिन अपने भक्तों को रुपया बाँटा करते हैं। यदि कोई कलाकार वहाँ जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करता है तो उसे भी पुरस्कार मिलता है। प्रतिदिन दक्षिणा में बाबा के पास बहुत रुपये इकट्ठे हो जाया करते थे। इन रुपयों में से वे नित्य एक रुपया भक्त कोण्डाजी की तीनवर्षीय कन्या अमनी को, किसी को दो रुपये से पाँच रुपये तक, छः रुपये अमनी की माँ जमली को और दस से बीस रुपये तक और कभी-कभी पचास रुपये भी अपनी इच्छानुसार अन्य भक्तों को भी दिया करते थे। यह सुनकर मंडली शिरडी आकर रुकी। मंडली बहुत सुन्दर भजन और गायन किया करती थी, परन्तु उनका भीतरी ध्येय तो द्रव्योपार्जन ही था। मंडली में तीन व्यक्ति तो बड़े ही लालची थे। केवल प्रधान स्त्री का ही स्वभाव इन लोगों से सर्वथा भिन्न था। उसके हृदय में बाबा के प्रति श्रद्धा तथा आदर था। एक बार जब दोपहर की आरती हो रही थी, तभी उस स्त्री की भक्ति और विश्वास देखकर बाबा प्रसन्न हो गये। फिर क्या था? बाबा ने उसे उसके इष्ट के रूप में दर्शन दिये और केवल उसे ही बाबा सीतानाथ के रूप में दिखलाई दिये, जब कि अन्य उपस्थित लोगों को सदैव की भाँति ही। अपने प्रिय इष्ट का दर्शन पाकर वह द्रवित हो गई तथा उसका कंठ रुँध गया और आँखों से अश्रुधारा बहने

लगी। तभी प्रेमोन्मत्त हो वह ताली बजाने लगी। उसको इस प्रकार आनन्दित देख लोगों को कौतूहल तो होने लगा, परन्तु कारण किसी को भी ज्ञात न हो रहा था। दोपहर के पश्चात् उसने वह भेद अपने पति से प्रगट किया। बाबा के श्रीरामस्वरूप में उसे कैसे दर्शन हुए इत्यादि उसने सब बताया। पति ने सोचा कि मेरी स्त्री बहुत भोली और भावुक है, अतः इसे राम का दर्शन होना एक मानसिक विकार के अतिरिक्त कुछ नहीं है। उसने ऐसा कहकर उसकी उपेक्षा कर दी कि कहीं यह भी सभव हो सकता है कि केवल तुम्हें ही बाबा राम के रूप में दिखें और अन्य लोगों को सदैव की भाँति ही। स्त्री ने कोई प्रतिवाद न किया, क्योंकि उसे राम के दर्शन जिस प्रकार उस समय हुए थे, वैसे ही अब भी हो रहे थे। उसका मन शान्त, स्थिर और संतृप्त हो चुका था।

आश्चर्यजनक दर्शन

इसी प्रकार दिन बीतते गये। एक दिन रात्रि में उसके पति को एक विचित्र स्वप्न आया। उसने देखा कि एक बड़े शहर में पुलिस ने गिरफ़्तार कर डोरी से बाँधकर उसे कारावास में डाल दिया है। तत्पश्चात् ही उसने देखा कि बाबा शान्त मुद्रा में सींकचों के बाहर उसके समीप खड़े हैं। उन्हें अपने समीप खड़े देखकर वह गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि "आपकी कीर्ति सुनकर ही मैं आपके श्रीचरणों में आया हूँ। फिर आपके इतने निकट होते हुए भी मेरे ऊपर यह विपत्ति क्यों आई?

तब वे बोले कि "तुम्हें अपने बुरे कर्मों का फल अवश्य भुगतना चाहिये। वह पुनः बोला कि "इस जीवन में मुझे अपने ऐसे कर्म की स्मृति नहीं, जिसके कारण मुझे ये दुर्दिन देखने का अवसर मिला।" बाबा ने कहा कि "यदि इस जन्म में नहीं तो गत जन्म में अवश्य कोई बुरा कर्म किया होगा।" तब वह कहने लगा कि "मुझे तो अपने गत जन्म की कोई स्मृति नहीं, परन्तु यदि एक बार मान भी लूँ कि कोई बुरा कर्म हो भी गया होगा तो अपने यहाँ होते हुए तो उसे भस्म हो जाना चाहिये, जिस प्रकार सूखी घास अग्नि द्वारा शीघ्र भस्म हो जाती है।" बाबा ने पूछा, "क्या तुम्हारा सचमुच ऐसा दृढ़ विश्वास है?" उसने कहा, - "हाँ।"

बाबा ने उससे अपनी आँखें बन्द करने को कहा और जब उसने आँखें बन्द कीं, उसे किसी भारी वस्तु के गिरने की आहट सुनाई दी। आँखें खोलने पर उसने अपने को कारावास से मुक्त पाया। पुलिस वाला नीचे गिरा पड़ा है तथा उसके शरीर से रक्त प्रवाहित हो रहा है, यह देखकर वह अत्यन्त भयभीत दृष्टि से बाबा की ओर देखने

लगा। तब बाबा बोले कि "बच्चू! अब तुम्हारी अच्छी तरह खबर ली जायेगी। पुलिस अधिकारी अभी आवेंगे और तुम्हें गिरफ़ार कर लेंगे।" तब वह गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि "आपके अतिरिक्त मेरी रक्षा और कौन कर सकता है? मुझे तो एकमात्र आपका ही सहारा है। भगवान्! मुझे किसी प्रकार बचा लीजिये।"

तब बाबा ने फिर उससे आँखें बन्द करने को कहा। आँखें खोलने पर उसने देखा कि वह पूर्णतः मुक्त होकर सींकचों के बाहर खड़ा है और बाबा भी उसके समीप ही खड़े हैं। तब वह बाबा के श्रीचरणों पर गिर पड़ा।

बाबा ने पूछा कि "मुझे बताओ तो, तुम्हारे इस नमस्कार और पिछले नमस्कारों में किसी प्रकार की भिन्नता है या नहीं? इसका उत्तर अच्छी तरह सोच कर दो।"

वह बोला कि "आकाश और पाताल में जो अन्तर है, वही अंतर मेरे पहले और इस नमस्कार में है। मेरे पूर्व नमस्कार तो केवल धन-प्राप्ति की आशा से ही थे, परन्तु यह नमस्कार मैंने आपको ईश्वर जानकर ही किया है। पहले मेरी धारणा ऐसी थी कि यवन होने के नाते आप हिन्दुओं का धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं।"

बाबा ने पूछा कि "क्या तुम्हारा यवन पीरों में विश्वास नहीं?" प्रत्युत्तर में उसने कहा– "जी नहीं।" तब वे फिर पूछने लगे कि "क्या तुम्हारे घर में एक पंजा नहीं? क्या तुम ताबूत की पूजा नहीं किया करते? तुम्हारे घर में अभी भी एक काडबीबी नामक देवी है, जिसके सामने तुम विवाह तथा अन्य धार्मिक अवसरों पर कृपा की भीख माँगा करते हो।"

अन्त में जब उसने स्वीकार कर लिया तो वे बोले कि "इससे अधिक अब तुम्हें क्या प्रमाण चाहिये?" तब उनके मन में अपने गुरु श्रीरामदास के दर्शनों की इच्छा हुई। बाबा ने ज्यों ही उससे पीछे घूमने को कहा तो उसने देखा कि श्रीरामदास स्वामी उसके सामने खड़े हैं और जैसे ही वह उनके चरणों पर गिरने को तत्पर हुआ, वे तुरन्त अदृश्य हो गये।

तब वह बाबा से कहने लगा कि "आप तो वृद्ध प्रतीत होते हैं। क्या आपको अपनी आयु विदित है?"

बाबा ने पूछा कि "तुम क्या कहते हो कि मैं बूढ़ा हूँ? थोड़ी दूर मेरे साथ दौड़कर तो देखो।" ऐसा कहकर बाबा दौड़ने लगे और वह भी उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

दौड़ने से पैरों द्वारा जो धूल उड़ी, उसमें बाबा लुप्त हो गये और तभी उसकी नींद भी खुल गई।

जागृत होते ही वह गम्भीरतापूर्वक इस स्वप्न पर विचार करने लगा। उसकी मानसिक प्रवृत्ति में पूर्ण परिवर्त्तन हो गया। अब उसे बाबा की महानता विदित हो चुकी थी। उसकी लोभी तथा शंकालु वृत्ति लुप्त हो गयी और हृदय में बाबा के चरणों के प्रति सच्ची भक्ति उमड़ पड़ी। वह था तो एक स्वप्न मात्र ही, परन्तु उसमें जो प्रश्नोत्तर थे, वे अधिक महत्वपूर्ण थे। दूसरे दिन जब सब लोग मसजिद में आरती के निमित्त एकत्रित हुए, तब बाबा ने उसे प्रसाद में लगभग दो रुपये की मिठाई और दो रुपये नगद अपने पास से देकर आशीर्वाद दिया। उसे कुछ दिन और रोककर उन्होंने आशीष देते हुए कहा कि "अल्ला तुम्हें बहुत देगा और अब सब अच्छा ही करेगा।" बाबा से उसे अधिक द्रव्य की प्राप्ति तो न हुई, परन्तु उनकी कृपा उसे अवश्य ही प्राप्त हो गई, जिससे उसका बहुत ही कल्याण हुआ। मार्ग में उनको यथेष्ठ द्रव्य प्राप्त हुआ और उनकी यात्रा बहुत ही सफल रही। उन्हें यात्रा में कोई कष्ट या असुविधा न हुई और वे अपने घर सकुशल पहुँच गये। उन्हें बाबा के श्रीवचनों तथा आशीर्वाद और उनकी कृपा से प्राप्त उस आनन्द की सदैव स्मृति बनी रही।

इस कथा से विदित होता है कि बाबा किस प्रकार अपने भक्तों के समीप पधारकर उन्हें श्रेयस्कर मार्ग पर ले आते थे और आज भी ले आते हैं।

तेंडुलकर कुटुम्ब

बम्बई के पास बान्द्रा में एक तेंडुलकर कुटुम्ब रहता था, जो बाबा का पूरा भक्त था। श्रीयुत् रघुनाथराव तेंडुलकर ने मराठी भाषा में 'श्रीसाईनाथ भजनमाला' नामक एक पुस्तक लिखी है, जिसमें लगभग आठ सौ अभंग और पदों का समावेश तथा बाबा की लीलाओं का मधुर वर्णन है। यह बाबा के भक्तों के पढ़ने योग्य पुस्तक है। उनका ज्येष्ठ पुत्र बाबू डॉक्टरी परीक्षा में बैठने के लिये अनवरत अभ्यास कर रहा था। उसने कई ज्योतिषियों को अपनी जन्म-कुंडली दिखाई, परन्तु सभी ने बतलाया कि इस वर्ष उसके ग्रह उत्तम नहीं हैं किन्तु अग्रिम वर्ष परीक्षा में बैठने से उसे अवश्य सफलता प्राप्त होगी। इससे उसे बड़ी निराशा हुई और वह अशान्त हो गया। थोड़े दिनों के पश्चात् उसकी माँ शिरडी गई और उसने वहाँ बाबा के दर्शन किये। अन्य बातों के साथ उसने अपने पुत्र की निराशा तथा अशान्ति की बात भी बाबा से कही। उनके पुत्र को कुछ दिनों के

पश्चात् ही परीक्षा में बैठना था। बाबा कहने लगे कि "अपने पुत्र से कहो कि मुझ पर विश्वास रखे। सब भविष्यकथन तथा ज्योतिषियों द्वारा बनाई कुंडलियों को एक कोने में फेंक दे और अपना अभ्यास-क्रम चालू रख शान्तचित्त से परीक्षा में बैठे। वह अवश्य ही इस वर्ष उत्तीर्ण हो जायेगा। उससे कहना कि निराश होने की कोई बात नहीं है।" माँ ने घर आकर बाबा का सन्देश पुत्र को सुना दिया। उसने घोर परिश्रम किया और परीक्षा में बैठ गया। सब परचों के जवाब बहुत अच्छे लिखे थे। परन्तु फिर भी संशयग्रस्त होकर उसने सोचा कि सम्भव है कि उत्तीर्ण होने योग्य अंक मुझे प्राप्त न हो सकें। इसलिए उसने मौखिक परीक्षा में बैठने का विचार त्याग दिया। परीक्षक तो उसके पीछे ही लगा था। उसने एक विद्यार्थी द्वारा सूचना भेजी कि उसे लिखित परीक्षा में तो उत्तीर्ण होने लायक अंक प्राप्त हैं। अब उसे मौखिक परीक्षा में अवश्य ही बैठना चाहिये। इस प्रकार प्रोत्साहन पाकर वह उसमें भी बैठ गया तथा दोनों परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो गया। उस वर्ष उसकी ग्रह-दशा विपरीत होते हुए भी बाबा की कृपा से उसने सफलता पायी। यहाँ केवल इतनी ही बात ध्यान देने योग्य है कि **कष्ट और संशय की उत्पत्ति अन्त में दृढ़ विश्वास में परिणत हो जाती है। जैसी भी हो, परीक्षा तो होती ही है, परन्तु यदि हम बाबा पर दृढ़ विश्वास और श्रद्धा रखकर प्रयत्न करते रहें तो हमें सफलता अवश्य ही मिलेगी।**

इसी बालक के पिता रघुनाथराव बम्बई की एक विदेशी व्यवसायी फर्म में नौकरी करते थे। वे बहुत वृद्ध हो चुके थे और अपना कार्य सुचारुरूप से नहीं कर सकते थे। इसलिये वे अब छुट्टी लेकर विश्राम करना चाहते थे। छुट्टी लेने पर भी उनके शारीरिक स्वास्थ्य में कोई विशेष परिवर्त्तन न हुआ। अब यह आवश्यक था कि सेवानिवृत्ति की पूर्वकालिक छुट्टी ली जाय। एक वृद्ध और विश्वासपात्र नौकर होने के नाते प्रधान मैनेजर ने उन्हें पेन्शन देकर सेवा-निवृत्त करने का निर्णय किया। पेन्शन कितनी दी जाय, यह प्रश्न विचाराधीन था। उन्हें १५० रुपये मासिक वेतन मिलता था। इस हिसाब से पेन्शन हुई ७५ रुपये, जो कि उनके कुटुम्ब के निर्वाह हेतु अपर्याप्त थी। इसलिये वे बड़े चिन्तित थे। निर्णय होने के पन्द्रह दिन पूर्व ही बाबा ने श्रीमती तेंडुलकर को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि "मेरी इच्छा है कि पेन्शन १०० रुपये दी जाय। क्या तुम्हें इससे सन्तोष होगा?"

श्रीमती तेंडुलकर ने कहा कि "बाबा मुझ दासी से आप क्या पूछते हैं? हमें तो आपके श्री-चरणों में पूर्ण विश्वास है।"

यद्यपि बाबा ने १०० रुपये कहे थे, परन्तु उसे विशेष प्रकरण समझकर १० रुपये अधिक अर्थात् ११० रुपये पेन्शन निश्चित हुई। बाबा अपने भक्तों के लिये कितना अपरिमित स्नेह और कितनी चिन्ता रखते थे?

कैप्टन हाटे

बीकानेर के निवासी कैप्टन हाटे बाबा के परम भक्त थे। एक बार स्वप्न में बाबा ने उनसे पूछा कि "क्या तुम्हें मेरी विस्मृति हो गई?" श्री. हाटे ने उनके श्रीचरणों से लिपट कर कहा कि "यदि बालक अपनी माँ को भूल जाये तो क्या वह जीवित रह सकता है?"

इतना कहकर श्री. हाटे शीघ्र बगीचे में जाकर कुछ वलपपडी (सेम) तोड़ लाये और एक थाली में सीधा (सूखी भिक्षा) तथा दक्षिणा रखकर बाबा को भेंट करने आये। उसी समय उनकी आँखें खुल गईं और उन्हें ऐसा भान हुआ कि यह तो एक स्वप्न था। फिर वे सब वस्तुएँ, जो उन्होंने स्वप्न में देखी थीं, बाबा के पास शिरडी भेजने का निश्चय कर लिया। कुछ दिनों के पश्चात् वे ग्वालियर आये और वहाँ से अपने एक मित्र को बारह रुपयों का मनीऑर्डर भेजकर पत्र में लिख भेजा कि दो रुपयों में सीधा की सामग्री और वलपपड़ी (सेम) आदि मोल लेकर तथा दस रुपये दक्षिणास्वरूप साथ में रखकर मेरी ओर से बाबा को भेंट देना। उनके मित्र ने शिरडी आकर सब वस्तुएँ तो संग्रह कर लीं, परन्तु वलपपड़ी प्राप्त करने में उन्हें अत्यन्त कठिनाई हुई। थोड़ी देर के पश्चात् ही उन्होंने एक स्त्री को सिर पर टोकरी रखे सामने से आते देखा। उन्हें यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उस टोकरी में वलपपड़ी के अतिरिक्त कुछ भी न था। तब उन्होंने वलपपड़ी खरीद कर सब एकत्रित वस्तुएँ लेकर मसजिद में जाकर श्री. हांटे की ओर से बाबा को भेंट कर दी। दूसरे दिन श्री. निमोणकर ने उसका नैवेद्य (चावल और वलपपड़ी की सब्जी) तैयार कर बाबा को भोजन कराया। सब लोगों को बड़ा विस्मय हुआ कि बाबा ने भोजन में केवल वलपपड़ी ही खाई और अन्य वस्तुओं को स्पर्श तक न किया। उनके मित्र द्वारा जब इस समाचार का पता कैप्टन हाटे को चला तो वे गद्गद् हो उठे और उनके हर्ष का पारावार न रहा।

पवित्र रुपया

एक अन्य अवसर पर कैप्टन हाटे ने विचार किया कि बाबा के पवित्र करकमलों द्वारा स्पर्शित एक रुपया लाकर अपने घर में अवश्य ही रखना चाहिये। अचानक ही उनकी भेंट अपने एक मित्र से हो गई, जो शिरडी जा रहे थे। उनके हाथ ही श्री. हाटे ने एक

रुपया भेज दिया। शिरडी पहुँचने पर बाबा को यथायोग्य प्रणाम करने के पश्चात् उसने दक्षिणा भेंट की, जिसे उन्होंने तुरन्त ही अपनी जेब में रख लिया। तत्पश्चात् ही उसने कैप्टन हाटे का रुपया भी अर्पण किया, जिसे वे हाथ में लेकर ग़ौर से निहारने लगे। उन्होंने उसका अंकित चित्र ऊपर की ओर कर अँगूठे पर रख खनखनाया और अपने हाथ में लेकर देखने लगे। फिर वे उनके मित्र से कहने लगे कि उदी सहित यह रुपया अपने मित्र को लौटा देना। मुझे उनसे कुछ नहीं चाहिये। उनसे कहना कि वे आनन्दपूर्वक रहें। मित्र ने ग्वालियर आकर वह रुपया हाटे को देकर वहाँ जो कुछ हुआ था, वह सब उन्हें सुनाया, जिसे सुनकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने अनुभव किया कि बाबा सदैव उत्तम विचारों को प्रोत्साहित करते हैं। उनकी मनोकामना बाबा ने पूर्ण कर दी।

(४) श्री. वामन नार्वेकर

पाठकगण अब एक भिन्न कथा श्रवण करें। एक महाशय, जिनका नाम वामन नार्वेकर था, उनकी साई-चरणों में प्रगाढ़ प्रीति थी। एक बार वे एक ऐसी मुद्रा लाये, जिसके एक ओर राम, लक्ष्मण और सीता तथा दूसरी ओर करबद्ध मुद्रा में मारुति का चित्र अंकित था। उन्होंने यह मुद्रा बाबा को इस अभिप्राय से भेंट की कि वे इसे अपने करस्पर्श से पवित्र कर उदी सहित लौटा दें। परन्तु उन्होंने उसे तुरन्त अपनी जेब में रख लिया। शामा ने वामनराव की इच्छा बताकर उनसे मुद्रा वापस करने का अनुरोध किया। तब वे वामनराव के सामने ही कहने लगे कि "यह भला उनको क्यों लौटाई जाय? इसे तो हमें अपने पास ही रखना चाहिये। यदि वे इसके बदले में पच्चीस रुपया देना स्वीकार करें तो मैं इसे लौटा दूँगा।" वह मुद्रा वापस पाने के हेतु श्री. वामनराव ने पच्चीस रुपये एकत्रित कर उन्हें भेंट किये। तब बाबा कहने लगे कि "इस मुद्रा का मूल्य तो पच्चीस रुपयों से कहीं अधिक है। शामा! तुम इसे अपने भंडार में जमा करके अपने देवालय में प्रतिष्ठित कर इसका नित्य पूजन करो।" किसी का साहस न था कि वे यह पूछ तो लें कि उन्होंने ऐसी नीति क्यों अपनाई? यह तो केवल बाबा ही जानें कि किसके लिये कब और क्या उपयुक्त है?

॥ श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु ॥

अध्याय ३०

शिरडी को खींचे गये भक्त

(१) वणी के काका वैद्य (२) खुशालचंद (३) बम्बई के रामलाल पंजाबी।

इस अध्याय में बतलाया गया है कि तीन अन्य भक्त किस प्रकार शिरडी की ओर खींचे गये।

प्राक्कथन

जो बिना किसी कारण भक्तों पर स्नेह करने वाले दया के सागर हैं तथा निर्गुण होकर भी भक्तों के प्रेमवश ही जिन्होंने स्वेच्छापूर्वक मानव शरीर धारण किया; जो ऐसे भक्त-वत्सल हैं कि जिनके दर्शन मात्र से ही भवसागर के भय और समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं; ऐसे श्री साईनाथ महाराज को हम क्यों न नमन करें? भक्तों को आत्मदर्शन कराना ही सन्तों का प्रधान कार्य है। श्री साई, जो सन्त शिरोमणि हैं, उनका तो मुख्य ध्येय ही यही है। जो उनके श्री-चरणों की शरण में जाते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट होकर निश्चित ही दिन-प्रतिदिन उनकी प्रगति होती है। उनके श्री-चरणों का स्मरण कर पवित्र स्थानों से भक्तगण शिरडी आते और उनके समीप बैठकर श्लोक पढ़कर गायत्री-मंत्र का जप किया करते थे। परन्तु जो निर्बल तथा सर्व प्रकार से दीन-हीन हैं और जो यह भी नहीं जानते कि भक्ति किसे कहते हैं, उनका तो केवल इतना ही विश्वास है कि अन्य सब लोग उन्हें असहाय छोड़कर उपेक्षा भले ही कर दें, परन्तु अनाथों के नाथ और प्रभु श्री साई मेरा कभी परित्याग न करेंगे। जिन पर वे कृपा करें, उन्हें प्रचण्ड शक्ति, नित्यानित्य में विवेक तथा ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है।

वे अपने भक्तों की इच्छायें पूर्णतः जानकर उन्हें पूर्ण किया करते हैं, इसीलिये भक्तों को मनोवांछित फल की प्राप्ति हो जाया करती है और वे सदा कृतज्ञ बने रहते हैं। हम उन्हें साष्टांग प्रणाम कर प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर हमें

समस्त कष्टों से बचा लें। जो विपत्ति-ग्रस्त प्राणी इस **प्रकार श्री साई से प्रार्थना करता** है, उनकी कृपा से उसे पूर्ण शान्ति तथा सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

श्री हेमाडपंत कहते हैं कि "हे मेरे प्यारे साई! तुम तो दया के सागर हो। **यह तो** तुम्हारी ही दया का फल है, जो आज यह 'साई सच्चरित्र' भक्तों के समक्ष प्रस्तुत **है**, अन्यथा मुझमें इतनी योग्यता कहाँ थी, जो ऐसा कठिन कार्य करने का दुस्साहस भी कर सकता? जब पूर्ण उत्तरदायित्व साई ने अपने ऊपर ही ले लिया तो हेमाडपंत को तिलमात्र भी भार प्रतीत न हुआ और न ही इसकी उन्हें चिन्ता ही हुई। श्रीसाई ने इस ग्रन्थ के रूप में उनकी सेवा स्वीकार कर ली। यह केवल उनके पूर्वजन्म के शुभ संस्कारों के कारण ही सम्भव हुआ, जिसके लिए वे अपने को भाग्यशाली और कृतार्थ समझते हैं।

नीचे लिखी कथा कपोलकल्पित नहीं, वरन् विशुद्ध अमृततुल्य है। इसे जो हृदयंगम करेगा, उसे श्री साई की महानता और सर्वव्यापकता विदित हो जायेगी, परन्तु जो वादविवाद और आलोचना करना चाहते हैं, उन्हें इन कथाओं की ओर ध्यान देने की आवश्यकता भी नहीं है। यहाँ तर्क की नहीं, वरन् प्रगाढ़ प्रेम और भक्ति की अत्यन्त अपेक्षा है। विद्वान् भक्त तथा श्रद्धालु जन अथवा जो अपने को साई-पद-सेवक समझते हैं, उन्हें ही ये कथाएँ रुचिकर तथा शिक्षाप्रद प्रतीत होंगी; अन्य लोगों के लिए तो वे निरी कपोल-कल्पनाएँ ही हैं। श्रीसाई के अंतरंग भक्तों को श्रीसाईलीलाएँ कल्पतरु के सदृश हैं। श्रीसाई-लीलारूपी अमृतपान करने से अज्ञानी जीवों को मोक्ष, गृहस्थाश्रमियों को सन्तोष तथा मुमुक्षुओं को एक उच्च साधन प्राप्त होता है। अब हम इस अध्याय की मूल कथा पर आते हैं।

काका जी वैद्य

नासिक जिले के वणी ग्राम में काका जी वैद्य नाम के एक व्यक्ति रहते थे। वे श्रीसप्तशृंगी देवी के मुख्य पुजारी थे। एक बार वे विपत्तियों में कुछ इस प्रकार ग्रसित हुए कि उनके चित्त की शांति भंग हो गई और वे बिलकुल निराश हो उठे। एक दिन अति व्यथित होकर देवी के मन्दिर में जाकर अन्तःकरण से वे प्रार्थना करने लगे कि "हे देवि! हे दयामयी! मुझे कष्टों से शीघ्र मुक्त करो।" उनकी प्रार्थना से देवी प्रसन्न हो गईं और उसी रात्रि को उन्हें स्वप्न में बोलीं कि "तू बाबा के पास जा, वहाँ तेरा मन शान्त और स्थिर हो जायेगा।" बाबा का परिचय जानने को काका जी बड़े उत्सुक थे, परन्तु देवी से प्रश्न करने के पूर्व ही उनकी निद्रा भंग हो गई। वे विचारने लगे कि ऐसे ये कौन से बाबा हैं, जिनकी ओर देवी ने मुझे संकेत किया है। कुछ देर विचार करने के पश्चात्

वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सम्भव है कि वे त्र्यंबकेश्वर बाबा (शिव) ही हों। इसलिये वे पवित्र तीर्थ त्र्यंबक (नासिक) को गये और वहाँ रहकर दस दिन व्यतीत किये। वे प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त हो, रुद्र मंत्र का जप कर, साथ ही साथ अभिषेक व अन्य धार्मिक कृत्य भी करने लगे। परन्तु उनका मन पूर्ववत् ही अशान्त बना रहा। तब फिर अपने घर लौटकर वे अति करुण स्वर में देवी की स्तुति करने लगे। उसी रात्रि में देवी ने उन्हें पुनः स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि "तू व्यर्थ ही त्र्यम्बकेश्वर क्यों गया? बाबा से तो मेरा अभिप्राय था शिरडी के श्रीसाई समर्थ से।" अब काका जी के समक्ष मुख्य प्रश्न यह उपस्थित हो गया कि वे कैसे और कब शिरडी जाकर बाबा के श्री दर्शन का लाभ उठायें"। **यथार्थ में यदि कोई व्यक्ति, किसी सन्त के दर्शन को आतुर हो तो केवल सन्त ही नहीं, भगवान् भी उसकी इच्छा पूर्ण कर देते हैं। वस्तुतः यदि पूछा जाय तो सन्त और अनन्त एक ही हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं।** यदि कोई कहे कि मैं स्वतः ही अमुक सन्त के दर्शन को जाऊँगा तो इसे निरे दम्भ के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? **सन्त की इच्छा के विरुद्ध उनके समीप कौन जाकर दर्शन ले सकता है?** उनकी सत्ता के बिना वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। **जितनी तीव्र उत्कंठा संत दर्शन की होगी, तदनुसार ही उसकी भक्ति और विश्वास में वृद्धि होती जायेगी और उतनी ही शीघ्रता से उनकी मनोकामना भी सफलतापूर्वक पूर्ण होगी।** जो निमंत्रण देता है, वह आदर आतिथ्य का प्रबन्ध भी करता है। काका जी के सम्बन्ध में सचमुच यही हुआ।

शामा की मान्यता

जब काकाजी शिरडी यात्रा करने का विचार कर रहे थे, उसी समय उनके यहाँ एक अतिथि आया (जो कि शामा के अतिरिक्त और कोई न था)। शामा बाबा के अन्तरंग भक्तों में से थे। वे ठीक इसी समय वणी में क्यों और कैसे आ पहुँचे, अब हम इस पर दृष्टि डालें। बाल्यावस्था में वे एक बार बहुत बीमार पड़ गये थे। उनकी माता ने अपनी कुलदेवी सप्तशृंगी से प्रार्थना की कि यदि मेरा पुत्र नीरोग हो जाये तो मैं उसे तुम्हारे चरणों पर लाकर डालूँगी। कुछ वर्षों के पश्चात् ही उनकी माता के स्तन में दाद हो गई। तब उन्होंने पुनः देवी से प्रार्थना की कि यदि मैं रोगमुक्त हो जाऊँ तो मैं तुम्हें चाँदी के दो स्तन चढ़ाऊँगी। पर ये दोनों वचन अधूरे ही रहे। परन्तु जब वे मृत्युशैया पर पड़ी थीं तो उन्होंने अपने पुत्र शामा को समीप बुलाकर उन दोनों वचनों की स्मृति दिलाई तथा उन्हें पूर्ण करने का आश्वासन पाकर प्राण त्याग दिये। कुछ दिनों के पश्चात् वे अपनी यह प्रतिज्ञा भूल गये और इसे भूले पूरे तीस वर्ष व्यतीत हो गये। तभी एक प्रसिद्ध ज्योतिषी

शिरडी आये और वहाँ लगभग एक मास ठहरे। श्रीमान् बूटीसाहेब और अन्य लोगों को बतलाये उनके सभी भविष्य प्रायः सही निकले, जिनसे सब को पूर्ण सन्तोष था। शामा के लघुभ्राता बापाजी ने भी उनसे कुछ प्रश्न पूछे। तब ज्योतिषी ने उन्हें बताया कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता ने अपनी माता को मृत्युशैया पर जो वचन दिये थे, उनके अब तक पूर्ण न किये जाने के कारण देवी असन्तुष्ट होकर उन्हें कष्ट पहुँचा रही हैं। ज्योतिषी की बात सुनकर शामा को उन अपूर्ण वचनों की स्मृति हो आई। अब और विलम्ब करना खतरनाक समझकर उन्होंने सुनार को बुलाकर चाँदी के दो स्तन शीघ्र तैयार कराये और उन्हें मसजिद में ले जाकर बाबा के समक्ष रख दिया तथा प्रणाम कर उन्हें स्वीकार कर वचनमुक्त करने की प्रार्थना की। शामा ने कहा कि मेरे लिये तो सप्तशृंगी देवी आप ही हैं, परन्तु बाबा ने साग्रह कहा कि तुम इन्हें स्वयं ले जाकर देवी के चरणों में अर्पित करो। बाबा की आज्ञा व उदी लेकर उन्होंने वणी को प्रस्थान कर दिया। पुजारी का घर पूछते-पूछते वे काका जी के पास जा पहुँचे। काका जी इस समय बाबा के दर्शनों को बड़े उत्सुक थे और ठीक ऐसे ही मौके पर शामा भी वहाँ पहुँच गये। वह संयोग भी कैसा विचित्र था? काकाजी ने आगन्तुक से उनका परिचय प्राप्त कर पूछा कि आप कहाँ से पधार रहे हैं? जब उन्होंने सुना कि वे शिरडी से ही आ रहे हैं तो वे एकदम प्रेमोन्मत्त हो शामा से लिपट गये और फिर दोनों का श्री साईलीलाओं पर वार्त्तालाप आरम्भ हो गया। अपने वचन संबंधी कृत्यों को पूर्ण कर वे काकाजी के साथ शिरडी लौट आये। काकाजी मसजिद पहुँच कर बाबा के श्रीचरणों से जा लिपटे। उनके नेत्रों से प्रेमाश्रुओं की धारा बहने लगी और उनका चित्त स्थिर हो गया। देवी के दृष्टांतानुसार जैसे ही उन्होंने बाबा के दर्शन किये, उनके मन की अशांति तुरन्त नष्ट हो गई और वे परम शीतलता का अनुभव करने लगे। वे विचार करने लगे कि कैसी अद्‌भुत शक्ति है कि बिना कोई सम्भाषण या प्रश्नोत्तर किये अथवा आशीष पाये, दर्शन मात्र से ही अपार प्रसन्नता हो रही है! सचमुच में दर्शन का महत्त्व तो इसे ही कहते हैं। उनके तृषित नेत्र साई-चरणों पर अटक गये और वे अपनी जिह्वा से एक शब्द भी न बोल सके। बाबा की अन्य लीलाएँ सुनकर उन्हें अपार आनन्द हुआ और वे पूर्णतः बाबा के शरणागत हो गये। सब चिन्ताओं और कष्टों को भूलकर वे परम आनन्दित हुए। उन्होंने वहाँ सुखपूर्वक बारह दिन व्यतीत किये और फिर बाबा की आज्ञा, आशीर्वाद तथा उदी प्राप्त कर अपने घर लौट गये।

खुशालचन्द (राहातानिवासी)

ऐसा कहते हैं कि प्रातः बेला में जो स्वप्न आता है, वह बहुधा जागृतावस्था में सत्य

ही निकलता है। ठीक है, ऐसा ही होता होगा। परन्तु बाबा के सम्बध में समय का ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं था। ऐसा ही एक उदाहरण प्रस्तुत है: – बाबा ने एक दिन तृतीय प्रहर काकासाहेब को ताँगा लेकर राहाता से खुशालचन्द को लाने के लिये भेजा, क्योंकि खुशालचन्द से उनकी कई दिनों से भेंट न हुई थी। राहाता पहुँच कर काकासाहेब ने यह सन्देश उन्हें सुना दिया। यह सन्देश सुनकर उन्हें महान् आश्चर्य हुआ और वे कहने लगे कि दोपहर को भोजन के उपरान्त थोड़ी देर को मुझे झपकी सी आ गई थी, तभी बाबा स्वप्न में आये और मुझे शीघ्र ही शिरडी आने को कहा। परन्तु घोड़े का उचित प्रबन्ध न हो सकने के कारण मैंने अपने पुत्र को यह सूचना देने के लिये ही उनके पास भेजा था। जब वह गाँव की सीमा तक ही पहुँचा था, तभी आप सामने से ताँगे में आते दिखे।

वे दोनों उस ताँगे में बैठकर शिरडी पहुँचे तथा बाबा से भेंटकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। बाबा की यह लीला देख खुशालचन्द गद्‌गद् हो गये।

बम्बई के रामलाल पंजाबी

बम्बई के एक पंजाबी ब्राह्मण श्री. रामलाल को बाबा ने स्वप्न में एक महन्त के वेश में दर्शन देकर शिरडी आने को कहा। उन्हें नाम ग्राम का कुछ भी पता चल न रहा था। उनको श्री-दर्शन करने की तीव्र उत्कंठा तो थी, परन्तु पता-ठिकाना ज्ञात न होने के कारण वे बड़े असमंजस में पड़े हुये थे। जो आमंत्रण देता है, वही आने का प्रबन्ध भी करता है और अन्त में हुआ भी वैसा ही। उसी दिन सन्ध्या समय जब वे सड़क पर टहल रहे थे तो उन्होंने एक दूकान पर बाबा का चित्र टँगा देखा। स्वप्न में उन्हें जिस आकृति वाले महन्त के दर्शन हुए थे, वे इस चित्र के ही सदृश थे। पूछताछ करने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि यह चित्र शिरडी के श्री साई समर्थ का है और तब उन्होंने शीघ्र ही शिरडी को प्रस्थान कर दिया तथा जीवनपर्यन्त शिरडी में ही निवास किया।

इस प्रकार बाबा ने अपने भक्तों को अपने दर्शन के लिये शिरडी में बुलाया और उनकी लौकिक तथा पारलौकिक समस्त इच्छाएँ पूर्ण कीं।

॥ श्री सद्‌गुरु साईनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु ॥